वासुदेव

सजे किरीट मोर पंख कृष्ण माथ झूमते।
चले समीर मंद-मंद शीश केश चूमते।।
दिखे स्वरूप मेघ श्याम नैन नील साँवरे।
लपेट पीतवर्ण देह हाथ बाँसुरी धरे।।

अरण्य जात कृष्ण धेनु गोप ग्वाल संग में।
कदंब डाल बैठ श्याम डोलते उमंग में।।
करें विनोद वासुदेव साथ गोप गोपियां।
अनन्य भक्ति कृष्ण की बसा रखें सभी हिया।।

करे घमंड चूर नंदलाल कालिया डरे।
मिले क्षमा सदैव कृष्ण भक्ति भाव जो भरे।।
करे प्रणाम देवता निहारते स्वरूप को।
कृतार्थ तीन लोक देख कृष्ण विश्वभूप को।।

सनातनी अधर्म से अनीति राह जो चले।
पुराण वेद ग्रंथ ज्ञानहीन हस्त को मले।।
मनुष्य याचना करें पुनः धरा प्रवेश हो।
चतुर्भुजी करो कृपा सदा परास्त क्लेश हो।।

यथार्थ

घट चाहे माटी का हो, मोती से जड़ित या हो ,
मदिरा के पात्र से तो, दुर्गंध ही आयेगी।
कितनी प्रशंसा करो, मीठे शब्द वाणी भरो ,
छद्म छवि कभी यहाँ , छुप नहीं पायेगी।

मन छल द्वेष गढ़े, पीठ पीछे दोष मढ़े,
प्रेम कड़ी एक दिन, टूट ही तो जायेगी।
करो मत बुरा कर्म, अपनाओ सत्य धर्म,
आत्मा को परमात्मा से, मिलन करायेगी।।

प्रतिदिन राम जप, नित ध्यान योग तप।
जीवन जटिल बाधा, त्वरित मिटायेगी।
उपजे आनंद सुख, हृदय से मिटे दुख,
त्याग भक्तिभाव से ही, मुक्ति मिल पाएगी।।

प्रिया देवांगन